02 | hindustantimes

HINDUSTAN TIMES, LUCKNOW
MONDAY, NOVEMBER 03, 2014

IISR's jaggery carnival makes it a sweet Sunday for children

LUCKNOW: Sunday became a little sweeter for Pratulya and Aparna when they won prizes for essaying a short piece and preparing icing out of the golden brown sweetener on the second day of 'Jaggery Carnival' underway at the at Indian Institute of Sugarcane Research.

Like Pratulya and Aparna, around 600 students of several city schools participated in the different competitions organised during the carnival. While the 'innovative food' challenge was mastered by Priya, Prabhati carved a sweet spot for herself by preparing an 'innovative chutney' from jaggery, colloquially called 'gur'. Another Prisha Anjas presented an excellent extempore on the traditional sweetener to win the first prize in the category.

The carnival also saw a wide variety of dishes prepared from jaggery or cane juice. Later in the day, deputy director general of ICAR, New Delhi, Dr SK Dutta gave away the prizes to winners of different competitions.

Experts brainstormed on the research, development and policy needs to boost the jaggery industry at a seminar on jaggery, also organised on second day of the two-day of the carnival. According to the carnival's organising secretary Dr SI Anwar: "To modernise jaggery industry in India semi-automated jaggery units for different farmers group (small, medium, large) was needed. Government subsidy to small-scale semi-automated jaggery unit was also necessary."

"Punjab farmers are exporting mashala jaggery at the rate of Rs240 per kilogram with value addition in product and packaging. This model should be popularised in other states with support from the government," experts said.

In a workshop on All India Coordinated Research Project, researchers discussed several issues of sugarcane research and emphasised on the need for a cutting-edge sugarcane technology that can withstand odd climates and poor resource condition. **HTC**

THE TIMES OF INDIA, LUCKNOW
MONDAY, NOVEMBER 3, 2014

Jaggery fest: On the second day of the jaggery carnival about 600 students from LPS, APS, CMS, Central Academy, La Martiniere College, St Francis' College and other schools of the city participated in different competitions.

the pioneer
LUCKNOW | MONDAY | NOVEMBER 3, 2014

Children participate in jaggery carnival

PIONEER NEWS SERVICE
LUCKNOW

Children of all age groups participated and enjoyed the jaggery carnival at the Indian Institute of Sugarcane Research on Sunday.

On the second day of the carnival, about 600 children/students from LPS, APS, CMS, Central Academy, La Martiniere, St Francis, Kendriya Vidyalayas participated in various competitions organised at the carnival.

Women displayed their innovative food items prepared from jaggery and cane juice which judged by experts.

It was a fun day out for children who participated in several events. Prisha Anjas of La Martiniere (girls) secured first position in extempore on jaggery and Pratulya Anjas of St Francis' College won the first prize in essay writing on jaggery and second prize in extempore.

Deputy Director General, ICAR, New Delhi, Dr SK Dutta gave prizes to winners of different competitions. Dr Solomon, Dr Sunita Lal, Dr AK Sah, Dr Rachana, Dr Nishi and Dr Dinesh were also present at the prize distribution function.

Organising secretary Dr SI Anwar said: "From this carnival and seminar on jaggery, many points have emerged after deliberations during the meet. These need to be addressed at research, development and policy levels if we really want to modernise jaggery industry in India."

He pointed out that some of the important ones were development of semi-automated jaggery unit for different farmers groups (small, medium, large), provision of subsidy from Governement to small-scale semi-automated jaggery unit to make small-scale semi-automated jaggery viable.

"Jaggery as a cottage industry in UP must be promoted as there is provision of heavy tax on unit of more than 10 TCD capacity. The Punjab farmers are exporting Mashala jaggery at ₹240 per kg with value addition in product and packaging and this model should be popularised in other states with support from the Government," the organising secretary said.

गुड़ कार्निवाल के दूसरे दिन बच्चों ने किया धमाल

जाका, लखनऊ: भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में चल रहे गुड़ कार्निवाल के अंतिम दिन विभिन्न स्कूलों के लगभग 600 बच्चों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया तथा रंगारंग संगीत कार्यक्रम का भरपूर मजा लिया।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के उपमहानिदेशक डॉ. स्वपन के. दत्ता ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता बच्चों को पारितोषिक व स्मृति चिह्न देकर उत्साहवर्धन किया। ला मार्ट स्कूल की प्रिसा ने आशुभाषण में प्रथम स्थान, सेंट फ्रांसिस स्कूल के प्रतुल्य अंजस ने गुड़ पर निबंध प्रतियोगिता में प्रथम तथा आशुभाषण में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। संस्थान परिसर में ताजा गन्ने का रस, गुड़ व गुड़ के टाफियों के स्वाद का भी बच्चों ने खूब आनंद लिया। इस मौके पर संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन, डॉ. एके. साह, डॉ. सुनीता लाल, डॉ. रचना मिश्रा तथा डॉ. निशि प्रमुख रूप से मौजूद थे।

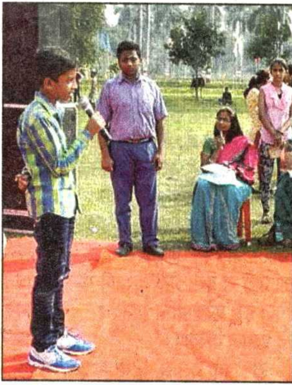

प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेते बच्चे

लखनऊ। सोमवार। 3 नवंबर 2014

अमर उजाला

गुड़ में है गुणों का खजाना

लखनऊ(ब्यूरो)। गुड़ की मिठास में शक्कर के मुकाबले 60 गुना अधिक मिनरल तत्व पाए जाते हैं। यह दर्द निवारक, शरीर से जहरीले तत्व कम करने और आयरन बढ़ाने का काम करता है। गुड़ के ऐसे ही फायदे बताते हुए रविवार को राजधानी में गुड़ कार्निवल का समापन हुआ। गुड़ उद्योग व उत्पादन तकनीक के आधुनिकीकरण पर राष्ट्रीय संगोष्ठी और द्वितीय वर्षीय वर्कशॉप भी इसी के साथ पूरी हुई। यहां शामिल देश भर के वैज्ञानिकों ने इस उद्योग के विकास और नागरिकों में गुड़ के फायदों को लोकप्रिय करने की जरूरत बताई।

आईआईएसआर में गुड़ से संबंधित गोष्ठी और वर्कशॉप

वैज्ञानिकों ने बताया कि 1970 तक देश में उगाए जा रहे गन्ने का 60 प्रतिशत हिस्सा गुड़ बनाने में खर्च होता है, आज यह केवल 15 प्रतिशत रह गया है। इससे उत्पादन 80 लाख टन से घटकर 40 लाख टन रह गया है। तकनीक तक 20वीं शताब्दी की उपयोग हो रही है, जो ठीक से उत्पादन कर पाती है न ही स्वास्थ्य की दृष्टि से ठीक है। आईआईएसआर निदेशक डॉ. एस सोलोमन ने आभार जताया। संगोष्ठी व कार्निवल सचिव डॉ. एसआई अनवर और वर्कशॉप आयोजन सचिव डॉ. ओके ओझा ने वैज्ञानिकों से मिले सुझावों को सामने रखा। प्रमुख वैज्ञानिक डॉ. एके शाह ने बताया कि वैज्ञानिकों ने गन्ने की बेहतर प्रजातियों के विकास में लोकप्रिय मॉलिक्यूलर मार्कर और बायोटेक्नोलॉजी के उपयोग को बढ़ावा देने पर जोर दिया। कार्यक्रम में वैज्ञानिक डॉ. सुनीता लाल, डॉ. रचना मिश्रा और डॉ. निशि भी शामिल रहे।

गुण कार्निवाल कार्यक्रम के अंतिम दिन लगाई गई उत्पादों की प्रदर्शनी देखते लोग।

गुड़ में हो वैल्यू एडिशन

आईआईएसआर वैज्ञानिक डॉ. एसआइ अनवर, डॉ. आरडी सिंह और डॉ. जसवंती सिंह ने कहा कि गुड़ को बनाने के दौरान उसमें आंवले के स्लाइस मिलाकर उसे विटामिन सी से भरपूर किया जा सकता है।

कार्निवल के विजेता पुरस्कृत

कार्निवल में अवध पब्लिक स्कूल, लखनऊ पब्लिक स्कूल, सेंट्रल एकेडमी, सीएमएस आदि स्कूलों के विद्यार्थी शामिल हुए। आईसीएआर के उपमहानिदेशक डॉ. स्वपन के दत्ता ने पुरस्कार दिए। इनमें ला-मार्ट स्कूल की प्रिसा और प्रतुल्य अंजस ने आशुभाषण में पुरस्कार पाए। अन्य विजेता- बोरा दौड़ : शैली श्रीवास्तव, उमेश यादव, वरुण सिंह, खरगोश दौड़ : इशान रस्तोगी, दिव्यांश नेगी, अंकित, चम्मच दौड़ : शिवांश त्रिपाठी, ललित यादव, अगम यादव, फैन्सी ड्रेस : मल्लिशिखा अरोड़ा, सौमिल दास, सिद्धार्थ, गुड़ बेस्ड एनर्जी ड्रिंक : प्रभाती, गुड़ बेस्ड खाद्य सामग्री : प्रिया, प्रीति, शैया मिश्रा, गुड़ की चटनी : प्रभाती, नीलम सिंह, जूही।

राष्ट्रीय
www.samaylive.com
सच कहने की हिम्मत
सहारा
राष्ट्रीयता • कर्त्तव्य • समर्पण
दून • वाराणसी से प्रकाशित
लखनऊ | सोमवार • 3 नवम्बर • 2014

आय बढ़ाने के लिए ड्रिप सिंचाई व सहफसली खेती करें गन्ना किसान

सरोजनीनगर-लखनऊ (एसएनबी)। रायबरेली रोड स्थित भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान परिसर में गुड़ उद्योग के आधुनिकरण पर आयोजित दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी में शोधकर्ताओं ने कहा कि किसान सब-सरफेस ड्रिप सिंचाई विधि अपनाकर सिंचाई जल बचाने के साथ ही गन्ना का उत्पादन भी बढ़ा सकते हैं। यहीं नहीं गन्ना में सहफसली खेती के लिए ऊंची बेड पर सह-फसल बोआई विधि को और अधिक फायदेमंद है। इसके लिए किसानों को उचित सह-फसलों की प्रजातियों का चयन करना चाहिए।

शोधकर्ताओं ने यह भी माना कि पंजाब, गुजरात तथा कर्नाटक की तर्ज पर प्रदेश में भी 30 टन प्रति दिन की क्षमता तक को कुटीर उद्योग की श्रेणी में रखा जाना चाहिए। इससे गन्ना किसानों को काफी लाभ होगा। संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए आयोजन सचिव डा. एसआई अनवर ने कहा कि पंजाब में गुड़ व अन्य कृषि उत्पादों के विपणन के लिए आत्मा द्वारा वित्त पोषित आत्मा किसान हाट का मॉडल अन्य राज्यों में भी अपनाना चाहिए। पंजाब के किसान मसाला गुड़ का पैकेजिंग कर विदेशों में 240 रु. प्रति किलो की दर से निर्यात कर रहे हैं, इस सफल प्रयास से अन्य राज्यों के किसान काफी कुछ सीख सकते हैं। इस मौके पर आयोजित प्रतियोगिताओं के विजयी प्रतिभागियों को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के उपमहानिदेशक डा. स्वपन के. दत्ता ने स्मृति चिह्न देकर सम्मानित किया। प्रतियोगिताओं में शैली श्रीवास्तव, इशान रस्तोगी, शिवांश त्रिपाठी, मल्लिशिखा अरोड़ा, अपर्णा, प्रतुल्य अंजस, प्रिसा अंजस, हर्षिता मिश्रा, दिव्याशु यादव व प्रभाती पहले स्थान पर रहे। संस्थान के निदेशक डा. सुशील सोलोमन, डा. सुनीता लाल, डा. रचना मिश्रा तथा डा. निशि प्रमुख रूप से मौजूद थे। इस मौके पर बच्चों ने ताजा गन्ने का रस, गुड़ व गुड़ की टाफियों के स्वाद का खूब आनंद लिया।

प्रतियोगिताओं के साथ गुड़ कार्निवल खत्म

■ संवाददाता, लखनऊ

ये हुईं प्रतियोगिताएं

यहां पर बोरा दौड़, खरगोश दौड़, चम्मच में गुड़ लेकर दौड़, फैंसी ड्रेस, गुड़ पर निबन्ध लेखन, आशुभाषण, वैलून फुलाना और खजाने की खोज समेत कई प्रतियोगिताएं हुईं। इसमें शैली श्रीवास्तव, उमेश कुमार यादव, इशान रस्तोगी, दिव्यांश नेगी, अंकित, मल्लिशिखा अरोड़ा, सौमिल दास, सिद्धार्थ, प्रिसा अंजस, प्रतुल्य अंजस, हर्षित मिश्र, राजीव सिंह, अमन बर्नवाल, दिव्यांशु यादव, प्रग्यांशु शर्मा, रूपम और वरुण सिंह समेत तमाम लोग विजयी घोषित किए गए।

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में चल रहे दो दिवसीय गुड़ कार्निवल का समापन रविवार को प्रतियोगिताओं के साथ हो गया। इस दौरान विजेताओं को सम्मानित भी किया गया। वहीं, संस्थान परिसर में ताजा गन्ने का रस, गुड़ और गुड़ की बनी टॉफियों का भी बच्चों ने खूब आनंद लिया। मौके पर संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन, डॉ. एके शाह, डॉ. सुनीता लाल और डॉ. रचना मिश्रा समेत अन्य लोग उपस्थित थे।

राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन में सचिव डॉ. एसआई अनवर ने बताया कि पंजाब, गुजरात और कर्नाटक की तर्ज पर उत्तर प्रदेश में भी 30 टन प्रति दिन की क्षमता तक को कुटीर उद्योग की श्रेणी में रखा जाना चाहिए। इससे किसानों पर भार कम पड़ेगा और वे ठीक से उत्पादन कर सकेंगे। उन्होंने जानकारी दी कि पंजाब के किसान गुड़ की पैकेजिंग कर विदेशों में 240 रुपये प्रति किलों की दर से निर्यात कर रहे हैं, जबकि प्रदेश में गन्ना किसानों की हालत खराब है। हमें यहां की व्यवस्थाओं और नीतियों की तरफ ध्यान देना चाहिए। गन्ना प्रजनक संस्थान कोयम्बटूर के डॉ. बक्शी राम ने बताया कि भारत में गन्ना की अब तक लगभग 600 किस्मों को विकसित किया गया है, जबकि लगभग 30-35 किस्मों को ही किसान प्रयोग कर रहे हैं। किसान पिछले 15-20 साल से एक ही किस्म के गन्ने का इस्तेमाल कर रहे हैं। इससे उत्पादन प्रभावित हुआ है। इसे बदलना चाहिए।

डेली न्यूज़ एक्टिविस्ट
लखनऊ, सोमवार, 3 नवंबर 2014
5

बच्चों ने लिया गुड़ की टाफियों का स्वाद

लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में आयोजित गुड़ कार्निवाल के दूसरे दिन विभिन्न स्कूलों के लगभग 600 बच्चों ने कई प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। साथ ही रंगारंग संगीत कार्यक्रम का भरपूर लुत्फ भी लिया। इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के उपमहानिदेशक डॉ. स्वपन के. दत्ता ने सम्मानित किया। ला मार्ट स्कूल की प्रिंसा ने आशु भाषण में पहला स्थान हासिल किया, तो सेंट फ्रांसिस स्कूल के प्रतुल्य अंजस ने गुड़ पर निबंध प्रतियोगिता में पहल और आशुभाषण में दूसरा स्थान प्राप्त किया। संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन, डॉ. एके साह, डॉ. सुनीता लाल, डॉ. रचना मिश्रा और डॉ. निशि प्रमुख रूप से मौजूद थे। बच्चों ने ताजा गन्ने का रस, गुड़ और गुड़ की टाफियों के स्वाद का भी खूब आनंद लिया।

इस मौके पर अवध पब्लिक स्कूल, लखनऊ पब्लिक स्कूल, सेंट्रल एकेडमी और सीएमएस के अलावा अन्य कॉलेजों के बच्चे भी मौजूद रहे। संगोष्ठी में पंजाब, उत्तर प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, तमिलनाडू, ओड़िसा, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश के 125 शोधकर्ताओं, उद्यमियों, गुड़ निर्माताओं और किसानों ने अपने विचार रखे। किसानों के लिए अलग-अलग गुड़ बनाने की आटोमैटिक प्लांट बनाने की जरूरत पर सभी ने सहमति जताया। उत्तर प्रदेश में 10 टन प्रति दिन से अधिक की क्षमता वाले गुड़ इकाइयों को बहुत ज्यादा कर चुकाना पड़ता है, इसे भी खत्म करने पर भी विचार हुआ।

कल्पतरु एक्सप्रेस

लखनऊ, सोमवार, 3 नवम्बर 2014

न्यूज डायरी

30 टन क्षमता को कुटीर उद्योग का दर्जा मिले

लखनऊ। गुड़ के आधुनिकीकरण विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में 125 शोधकर्ताओं, उद्यमियों, गुड़ निर्माताओं तथा किसानों ने अपने विचार रखे। छोटे-बड़े तथा मंझोले किसानों के लिए अलग-अलग गुड़ बनाने की आटोमैटिक प्लान्ट बनाने की जरूरत पर सभी ने सहमति जताई। प्रदेश में 10 टन प्रतिदिन तक की क्षमता वाली गुड़ इकाइयों को टैक्स के भार से मुक्त करने की भी जरूरत बताई गई।

जनसंदेश टाइम्स

लखनऊ, सोमवार, 3 नवम्बर 2014

गुड़ कार्निवाल में बच्चों ने मचाया धमाल

लखनऊ। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में दो दिवसीय गुड़ कार्निवाल के दूसरे दिन राजधानी के विभिन्न स्कूलों से आये सैकड़ों की तादात में बच्चों ने रंगारंग प्रस्तुति देकर खूब धमाल मचाया।

इस अवसर पर प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के उपमहानिदेशक डॉ. स्वपन के दत्ता ने पारितोशिक व स्मृति चिन्ह देकर बच्चों का उत्साहवर्धन किया। इस मौके पर संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन, डॉ. ए के साह, डॉ. सुनीता लाल, डॉ. रचना मिश्रा और डॉ. निशि प्रमुख रुप से मौजूद थे। संस्थान परिसर में ताजा गन्ने का रस, गुड़ व गुड़ के टाफियों के स्वाद का भी बच्चों ने खूब आनंद लिया। गुड़ के आधुनिकरण विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में देश भर के 125 शोधकर्ताओं, उद्यमियों, गुड़ निर्माताओं तथा किसानों ने अपने विचार रखे। पंजाब में गुड़ व अन्य कृषि उत्पादों के विपणन के लिए आत्मा द्वारा वित्त पोषित आत्मा किसान हाट का मॉडल अन्य राज्यों में भी अपनाना चाहिए। गन्ना शोध पर कार्यााला में शोधकर्ताओं ने अपने विचार रखते हुए यह निष्कर्ष निकाला कि सब-सरफेस ड्रिप सिंचाई विधि अपनाकर सिंचाई जल में बचत के साथ गन्ना उत्पादकता भी बढ़ाया जा सकता है। गन्ना में सह फसली खेती के लिए ऊँची बेड पर सह-फसल बोआई विधि को और अधिक फायदेमंद बनाने के लिए उचित सह-फसलों की संस्तुत प्रजातियों का चयन बहुत आवयक है। ***वसं.***

पायनियर
लखनऊ, सोमवार, 3 नवंबर, 2014

'गुड़ के आधुनिकीकरण' विषय पर विद्वानों ने रखे विचार

गन्ना संस्थान परिसर में आयोजित गुड़ कार्निवाल के दूसरे दिन लगभग छः सौ बच्चे शामिल

पायनियर समाचार सेवा। लखनऊ

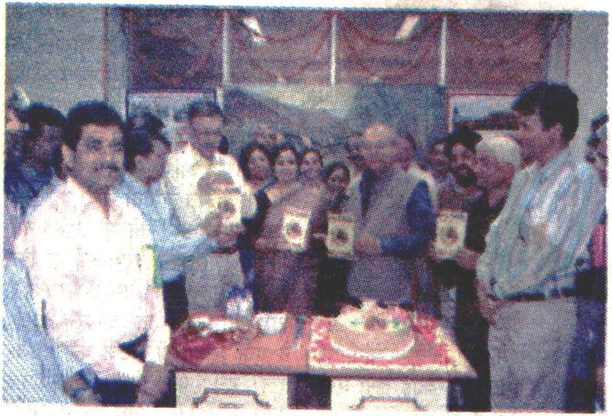

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान परिसर में चल रहे गुड़ कार्निवाल के दूसरे दिन विभिन्न स्कूलों के लगभग छः सौ बच्चों ने अनेक प्रतियोगिताओं में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इस मौके पर विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली के उपमहानिदेशक डॉ. स्वप्न के. दत्ता ने पारितोषिक व स्मृति चिह्न देकर बच्चों का उत्साहवर्धन किया। ला मार्ट स्कूल की प्रिसा ने आशुभाषण में प्रथम स्थान प्राप्त किया व संत फ्रांसिस स्कूल के प्रतुल्य अंजस ने गुड़ पर निबंध प्रतियोगिता में प्रथम तथा आशुभाषण में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। कार्यक्रम में संस्थान के निदेशक डॉ. सुशील सोलोमन, डॉ. एके साह, डॉ. सुनीता लाल, डॉ. रचना मिश्रा व डॉ. निशि प्रमुख रूप से मौजूद रहे। संस्थान परिसर में ताजा गन्ने का रस, गुड़ व गुड़ के टाफियों के स्वाद का भी बच्चों ने खूब आनंद लिया। इस अवसर पर 'गुड़ के आधुनिकीकरण' विषय पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में पंजाब, उत्तर प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, तमिलनाडु, ओड़ीसा, महाराष्ट्र व आंध्र प्रदेश के 125 शोधकर्ताओं, उद्यमियों, गुड़ निर्माताओं तथा किसानों ने अपने विचार रखे। वक्ताओं ने बताया कि छोटे, बड़े तथा मंझोले किसानों के लिए अलग अलग गुड़ बनाने की आटोमैटिक प्लांट बनाने की जरूरत है। इसके अलावा प्रदेश में 10 टन प्रतिदिन से अधिक की क्षमता वाले गुड़ इकाइयों को बहुत ज्यादा कर चुकाना पड़ता है इसे भी खत्म करना चाहिए। राष्ट्रीय संगोष्ठी के आयोजन सचिव डॉ. एसआई अनवर ने कहा कि पंजाब, गुजरात तथा कर्नाटक की तर्ज पर प्रदेश में भी 30 टन प्रति दिन की क्षमता तक को कुटीर उद्योग की श्रेणी में रखा जाए। उन्होंने कहा कि पंजाब में गुड़ व अन्य कृषि उत्पादों के विपणन के लिए आत्मा द्वारा वित्त पोषित आत्मा किसान हॉट का मॉडल अन्य राज्यों में भी अपनाना चाहिए। कार्निवाल को सफल बनाने मे संस्थान के अभिषेक कुमार, सुधीर, दीपक राय, अशफाक ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। गन्ना शोध पर कार्यशाला में शोधकर्ताओं ने निष्कर्ष निकाला कि सब सरफेस ड्रिप सिंचाई विधि अपनाकर सिंचाई जल में बचत के साथ गन्ना उत्पादकता भी बढ़ाया जा सकता है। गन्ना में सहफसली खेती के लिए ऊंची बेड पर सह फसल बुआई विधि को और अधिक फायदेमंद बनाने के लिए उचित सह फसलों की संस्तुति प्रजातियों का चयन बहुत आवश्यक है।

सोमवार , 03 नवम्बर 2014

हिन्दुस्तान

बच्चों और महिलाओं ने प्रतियोगिताओं में जीते कई पुरस्कार

गुड़ कार्निवाल

लखनऊ | कार्यालय संवाददाता

गुड़ कार्निवाल के समापन के अवसर पर बच्चों ने खूब धमाल मचाया। दो दिवसीय कार्निवाल में आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत भी किया गया। इस मौके पर फसल के उत्पादन को बढ़ाने के तरीकों पर भी चर्चा की गई।

रायबरेली रोड स्थित भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान में चल रहे दो दिवसीय गुड़ कार्निवाल का रविवार को समापन हो गया। कार्निवाल के अंतिम दिन बच्चों के लिए एक पैर से गुड़ की चौकी दौड़, गुड़ पर कविता, निबंध लेखन, प्रश्नोत्तरी आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं में बच्चों संग महिलाओं ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। इस मौके पर गन्ना चूसने और रस्साकशी की प्रतियोगिता भी आयोजित की गई। बच्चों ने जहां चाक पर बर्तन बनाना सीखा वहीं महिलाओं ने गुड़ से चटनी, पेय और व्यंजन बनाएं।

इस अवसर पर आयोजित संगोष्ठी में पंजाब, उत्तर प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश सहित अन्य राज्यों से आए 125 शोधकर्ताओं, उद्यमियों, गुड़ निर्माताओं व किसानों ने हिस्सा लिया। किसानों ने कार्यक्रम में अपने विचार रखते हुए कहा कि छोटे किसानों के लिए अलग-अलग गुड़ बनाने के आटोमैटिक प्लांट बनाने की जरूरत है। सचिव डॉ. एसआई अनवर ने इस मौके पर कहा कि पंजाब, गुजरात, कर्नाटक की तर्ज पर यूपी में भी 30 टन प्रति दिन की क्षमता तक को कुटीर उद्योग की श्रेणी में रखा जाए। पंजाब के किसान मसाला गुड़ की पैकेजिंग कर विदेशों में 240 रुपए प्रति किलो की दर से निर्यात कर रहे हैं, इससे बाकी राज्यों के किसान भी सीख रहे हैं।

इन्हें मिला पुरस्कार

ला मार्ट स्कूल के प्रिंस को आशुभाषण में प्रथम, सेंट फ्रांसिस स्कूल के प्रतुल्य अंजस को निबंध में प्रथम व आशुभाषण में द्वितीय पुरस्कार मिला। बोरा दौड़ में, शैली, उमेश व वरूण को, खरगोश दौड़ में इशान, दिव्यांश व अंकित, चम्मच गुड़ दौड़ में शिवांश, ललित, अगम, फैंसी ड्रेस में मल्लिशिखा, सौमिल, सिद्धार्थ, गुड़ कॉबिंग में अर्पणा, अर्चना व अनामिका, गुब्बारे फुलाने में हर्षित, राजीव व अमन, खजाने की खोज में दिव्यांशु, प्रग्यांशु व रूपम, गुड़ आधारित नवोन्मेषी में प्रिया, प्रीति व शैया को गुड़ की चटनी में प्रभाती, नीलम व जूही को क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय पुरस्कार मिला।

गुड़ कार्निवाल के अंतिम दिन रविवार को बच्चों ने चाक पर बर्तन बनाना सीखा।